विजेता जागो-मार्च 2025

1**. नया जन्म** - "मैं तुम से सच सच कहता हूं, जब तक कोई नया जन्म न ले, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता" (यूहन्ना 3:3)। यीशु ने बचाये जाने की शर्त रखी। जब हम अपने पापों का अंगीकार करते हैं और पश्चाताप करते हैं और यीशु पर भरोसा करते हैं जिन्होंने क्रूस पर पाप का दंड चुकाया तो हम वचन से धोए जाते हैं। तब परमेश्वर हमें उसकी आत्मा द्वारा वहन किये जाने की अनुमति देता है।

2. **प्रतिसंस्कृति** – "इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है" (2 कुर 5:17)। जब हम परमेश्वर की आत्मा से जन्म लेते हैं, तो हम एक नई रचना होते हैं और हमारी एक नई पहचान होती है। हम परमेश्वर की संतान और स्वर्ग के नागरिक बन गए हैं। हम पृथ्वी पर परमेश्वर के दूत हैं। प्रभु को आज अपने राज्य का विस्तार करने के लिए आपका उपयोग करने की अनुमति दें।

3.**प्रार्थना करना सीखना**- "परमेश्वर, हमें प्रार्थना करना सिखाए" (लूका 11:1ख)। पुराने समय के शिष्यों के समान , हम यीशु से सीख सकते हैं कि प्रार्थना कैसे करें। प्रभु की प्रार्थना आदर्श है। हम परमेश्वर को अपना पिता कह सकते हैं और अपने सभी अनुरोधों के साथ उसके पास जा सकते हैं। वह हमें बताना चाहता है कि वास्तविक पितृत्व क्या है।

4. **सबसे पहले परमेश्वर** - "'तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" (मत्ती 6:9) परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम इस तथ्य से प्रदर्शित होता है कि वह हमारे जीवन में पहला स्थान रखता है, कि उसके साथ हमारे रिश्ते से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। इसका एक अच्छा संकेतक यह है कि हम अपना समय किस प्रकार निवेश करते हैं। वचन आधारित पुरुष बनें.

5. **अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम** - "तेरा राज्य आये; तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो" (मत्ती 6:10)। यीशु ने अपने शिष्यों को सुसमाचार फैलाने के लिए भेजा, ताकि लोग अपने जीवन को समर्पित करते हुए परमेश्वर की ओर लौटें और बच जाएँ। सुसमाचार फैलाने की महान आज्ञा सिद्ध है और आज भी हमारा अधिकृत पत्र है।

6. **प्रावधान**- "हमें प्रतिदिन की रोटी दो" (मत्ती 6:11)। एक प्यारे पिता के रूप में परमेश्वर हमारी चिंता करते हैं और हर दिन हमारी जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं। वह हम पर ज़ोर नहीं दिखाते परन्तु हमारे साथ सम्मान से पेश आते है, बल्कि हमारी प्रार्थनाएँ सुनना चाहते है। आइए यह कभी न भूलें कि हमारे आनंद के लिए प्रत्येक अच्छा उपहार हमारे पिता की ओर से आता है।

7. **क्षमा** - “और जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारा अपराध क्षमा कर।” (मत्ती 6:12) यीशु ने क्रूस पर सभी का कर्ज़ उठाया। क्षमा करना दूसरों का हमारे प्रति जो ऋण है उसे समाप्त करने का सचेतन कार्य है। यह हमें अपने हृदयों में स्वतंत्र करता है। अच्छी ख़बर यह है कि मैं भी परमेश्वर से मुझे अपने कर्ज़ों से मुक्त करने और क्षमा किये जाने की प्रार्थना कर सकता हूँ।

8. **परीक्षा** - "और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा" (मत्ती 6:13)। परमेश्वर हमारे भीतर की विनाशकारी शक्ति और बाहर से हमें घेरने वाली सभी बुराईयों के बारे में जानता है। हम प्रभु से मदद मांग सकते हैं, क्योंकि हम अपनी ताकत से उबरने में असमर्थ हैं। वह हमें जीत हासिल करने में मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

9. **प्राथमिकताएँ** - “अपना बाहर का काम–काज ठीक करना, और खेत का काम तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना। ” (नीतिवचन 24:27)। परमेश्वर सभी चीज़ों का निर्माता है और उसने मनुष्य को उपजाने और शासन करने के लिए नियुक्त किया है। उसकी प्राथमिकताओं के अनुसार जियो। अपने सभी कार्यों से उसका सम्मान करें। उससे अपने निवेश में मार्गदर्शन करने के लिए कहें। अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए उस पर भी भरोसा करें।

10. **अनुग्रह** - "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" (इफ 2: 4)। क्योंकि प्राकृतिक मनुष्य में जैविक जीवन है लेकिन वह आध्यात्मिक रूप से मृत है, परमेश्वर ने हमें उद्धार दिलाने के लिए अपने पुत्र को दुनिया में भेजा। यदि आपने विश्वास से यीशु को प्राप्त किया है, तो आपके पास आध्यात्मिक जीवन है। परमेश्वर के अनुग्रह में आनंदित हो।

11. **धन** - "धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दु:ख नहीं मिलाता।" (नीतिवचन 10:22)। पुरुष अपने पेशे में अपना सब कुछ निवेश करने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सब कुछ करने के लिए प्रलोभित होते हैं। लेकिन असली दौलत वह नहीं है जो हमारे पास है, बल्कि वह है जो हम हैं। चरित्र की सुंदरता और परमेश्वर का आनंद सबसे बड़ा धन है।

12. **सबसे बड़ी आज्ञा** - "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम करना" (मत्ती 22:37)। हम परमेश्वर की रचना हैं और जीवन हमारे लिए उसका उपहार है। हमेशा उसके साथ लय में रहने के लिए प्रार्थना करें और एक वास्तविक उपासक बनने के लिए प्रार्थना करें जो आपके पूरे अस्तित्व, कार्य और क्षमता के साथ परमेश्वर का सम्मान करता है।

13. **विवाह में सामंजस्य** - "परन्तु तुम में से हर एक अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम रखे जैसा वह अपने आप से प्रेम रखता है, और पत्नी भी अपने पति का आदर करे' (इफिसियों 5:33)। विवाह परिवार का आधार है। धर्मनिरपेक्ष विचारधाराएँ यौन संबंधों को आम और मामूली करके परिवार को नष्ट करना चाहती हैं। अपने वैवाहिक जीवन में प्रेम और सद्भाव की मिसाल कायम करने के लिए प्रार्थना करें।

14. **परमेश्वर एक आदमी की तलाश में है** - "मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूँढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो···।" (यहेज 22:30) घर और समाज में पुरुषों की नेतृत्वकारी भूमिका होती है। परमेश्वर हमसे चरित्र, साहस, प्रतिबद्धता और आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होने की तत्परता की अपेक्षा करता है। परमेश्वर के ऐसे व्यक्ति बनें।

15. **गुनगुना**-"इसलिये कि तू गुनगुना है, और न गर्म है और न ठंडा, मैं तुझे अपने मुंह में से उगल दूंगा" (प्रकाशितवाक्य 3:16)। घुलना-मिलना, राजनीतिक रूप से सही होगा, या प्रवाह के साथ चलना टकराव से बचने का सबसे आसान तरीका हो सकता है। लेकिन मसीह अपने अनुयायियों से उम्मीद करते हैं कि वे दुनिया में नमक और प्रकाश बनें। अपने जीवन में सुसमाचार को जीने और प्रचार करने के लिए प्रार्थना करें।

16. **नम्रता**- "तुम सब एक दूसरे के प्रति नम्रता धारण करो" (1पत 5:5)। आज की संस्कृति में विनम्रता एक दुर्लभ वस्तु है। लेकिन बाइबल समाज के मानवतावादी वैश्विक नज़रिये को चुनौती देती है और हमें सामंजस्यपूर्ण संबंधों की कुंजी देती है। मसीह का शिष्य बनने के लिए प्रार्थना करें और उससे सीखें कि सच्ची विनम्रता क्या है।

17. **परमेश्वर को देख करके सहन करो** - "प्रिय परमेश्वर, मेरी सोच को दृष्टि से चलने के बजाय विश्वास से चलने में बदलो। मुझे आपको सभी चीज़ों में कार्य करते हुए देखने का कारण बना। कृपया भलाई और आपकी महिमा के लिए सभी काम करने के लिए आप पर भरोसा करके मुझे कठिनाई सहने में सक्षम बनाएं। विश्वास की आँखों के लिए धन्यवाद, जो मुझे परमेश्वर को देखने, सुनने और जानने की अनुमति देती है!" (इब्रानियों 11:27)

18. **परमेश्वर आपके भीतर** - "हे प्रभु, आपके बारे में जानना एक बात है, लेकिन आपके जीवन को अपने में समाहित करना उससे कहीं बेहतर है। आप मेरे भीतर हो। आपकी स्थायी उपस्थिति मुझे सांत्वना और सहारा देती है। मुझे मसीह में वह सब कुछ देने के लिए धन्यवाद जिसकी मुझे आवश्यकता है, ताकि मैं वह सब बन सकूं जो मुझे मसीह के माध्यम से बनना चाहिए। (यूहन्ना 14:20)

19. **विश्वास से जीना** -"प्रभु यीशु, आपने जीवन को बहुत सरल बना दिया है। आपने मुझे शुद्ध किया और अपने द्वारा धर्मी बनाया। आपने ऐसा इसलिए किया ताकि मैं आपके जीवन का अनुभव कर सकूं। इसलिए, विश्वास के द्वारा मैं आप

पर भरोसा करता हूं कि आप मेरे माध्यम से अपना जीवन जियें। आपका धन्यवाद कि अब मैं वास्तव में परमेश्वर के पुत्र के विश्वास के द्वारा जीने में सक्षम हूं" (रोमियों 1:17)

20. **आत्मा में चलना** -"हे परमेश्वर, मसीही जीवन जीने के मेरे प्रयास चलने से अधिक लड़खड़ाने और गिरने वाले रहे हैं। इसलिए, मैं हार मान लेता हूं और खुद को पूरी तरह से पवित्र आत्मा के नियंत्रण में सौंप देता हूं। कृपया मुझे अपनी आत्मा से भरें और मेरे माध्यम से अपना जीवन जिएं। "यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।" (गला 5:25)

21. **आत्मा द्वारा अनुग्रह** - "हे परमेश्वर, मुझे बहुत सारी बाधाओं का सामना करना पड़ा है जो भारी लग रही थीं। परन्तु अब, मैं देखता हूं कि ये मेरे लिये तेरे मृत्यु के साधन हैं। इसलिए, मैं स्वीकार करता हूं कि मेरा शरीर शक्तिहीन है। मैं मसीह के साथ अपनी मृत्यु को स्वीकार करता हूं और मुझे जीतने में सक्षम बनाने के लिए आपके पुनरुत्थान की सामर्थ पर भरोसा करता हूं। (यहेज़ 4:6-7)

22. **दृण एवं सुरक्षित** -"प्रिय परमेश्वर, मैं लगातार कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहा हूं, जो मेरी क्षमता से परे हैं। मैं भयभीत और निराश हो जाता हूं, परन्तु आपके लिए कुछ भी असम्भव नहीं। चूँकि मैंने मसीह को प्राप्त कर लिया है, अब आप मेरे भीतर रहते हैं। मैं जहाँ भी जाता हूँ आप मेरे साथ होते हैं। मैं आपकी निरंतर उपस्थिति के लिए आभारी हूं। (यहोशू 1:9)

23. **रणनीति** - "...मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।" (1 कुरिं 3:10)। यदि आप चाहते हैं कि आपका जीवन मायने रखे, तो इस समय जो मायने रखता है उस पर ध्यान केंद्रित करें। यीशु ने चेतावनी दी: "मनुष्य को सारे जगत को प्राप्त करने से और अपना प्राण खोने से क्या लाभ?" आज उसे अपना प्रभु बनने की अनुमति दें।

24. **प्रभावशाली व्यक्ति** - "तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखें और तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें" (मत्ती 5:16)। आपका संपूर्ण दृष्टिकोण, आपके ईश्वरीय मूल्य, आपका चरित्र और दया के कार्य समाज को प्रभावित करते हैं। भले ही आप बोल न सकें, लोग नोटिस करेंगे और परमेश्वर को महिमा मिलेगी।

25. **बोलो** - "अब मत डर, परन्तु बोलता जा और चुप न रहे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई तुझे हानि पहुंचाने के लिथे तुझ पर चढ़ाई न करेगा, क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं" (प्रेरित 18:9-10)). यदि परमेश्वर आपके साथ है तो

आप बहुमत हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति बने। आज ही उसके द्वारा उपयोग किये जाने के लिए तैयार हों।

26. **जलवायु** - हमारे घरों का माहौल इस बात पर निर्भर करता है कि हम दूसरों के साथ बातचीत और रिश्तों में कैसा व्यवहार करते हैं। नीतिवचन 15:1 कहता है, "कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है, परन्तु कठोर वचन से क्रोध भड़क उठता है।" पुरुष होने के नाते, हम परिवार में अच्छे माहौल की देखभाल करने और उसे बनाए रखने वाले पहले व्यक्ति हो सकते हैं, परमेश्वर से बुद्धि मांगें।

27. **आशीष**- बाइबिल में बच्चों को उनके माता-पिता द्वारा दी गयी आशीषों का अनगिनत बार उल्लेख किया गया है। यीशु ने स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत किया। "फिर उसने बच्चों को अपनी बाहों में लिया और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। (मरकुस 10:16)। अपने बच्चों के लिए लगातार प्रार्थना करें! उन्हें आशीर्वाद के शब्द दें। वे बाद में फल देने के लिए बीज होंगे!

28. **सम्बन्ध**- यदि हम मसीह के लिए एक संस्कृति तक पहुंचना चाहते हैं, तो इसका रास्ता पुरुषों तक पहुंचना है। पिता को अपने बेटों के साथ दिल के स्तर पर जुड़ने की जरूरत है (मलाकी 4:6 देखें)। WRT पुरुषों को इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए बाइबिल आधारित कार्यक्रम "सत्यवचन" को टीवी पर प्रस्तुत करता है। अपने चर्च के पुरुषों के लिए प्रार्थना करें और इस कार्यक्रम को देखें।

29. **उच्च मानक** - प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों के लिए जो मानक निर्धारित किया है वह जीवन के सभी क्षेत्रों में ऊंचा है। विवाह कोई अलग बात नहीं है. इफिसियों 5:25 को देखें - "हे पतियों, तुम में से हर एक अपनी पत्नी से प्रेम करे, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।" पतियों के लिए प्रार्थना करें कि वे इस मानक पर खरे उतरें और अपनी पत्नियों को मसीह के प्रेम से प्यार करें।

30. **समर्पण** - अपने परिवारों का भरण-पोषण करने और दूसरों पर दया दिखाने के लिए, हमें अपने काम में मेहनती होना चाहिए। क्योंकि "जो केवल वायु की ओर देखता है, वह कभी बीज नहीं बोएगा, और जो बादलों की ओर देखता है, वह कभी फसल नहीं काटेगा" (सभोप 11:4)। आइए हम मेहनती बनें और अपने कर्मचारियों और नियोक्ताओं तथा कार्यस्थल में अच्छी स्थितियों के लिए प्रार्थना करें।

31. **परिवर्तन** - 2 कुरिन्थियों 5:17 में, बाइबल सिखाती है कि "यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब वस्तुएं नई हो गई हैं!" हमारे बचाए जाने का सबसे बड़ा प्रमाण हमारी जीवनशैली है। मसीह के जीवन को अपनी पसंद और दृष्टिकोण के माध्यम से प्रकट करने के लिए प्रार्थना करें।